

सुप्रभात
रांची, शुक्रवार
27.10.2023

* नगर संस्करण | पेज : 12

धरती आबा की ऊर्जावान भूमि से प्रकाशित लोकप्रिय दैनिक

खबर मन्त्र

सबकी बात सबके साथ



khabarmantra.net आश्विन, शुक्ल पक्ष, त्रयोदशी संवत् 2080 ₹ 3 | वर्ष : 11 | अंक : 105 | 06 सनातन संस्कृति का विस्तार समाज ही करेगा



AHF
ASIA HOCKEY



प्रवेश निःशुल्क

झारखण्ड महिला एशियन चैम्पियंस ट्रॉफी 2023 आज से शुभारंभ

आज के मैच

समय: सायं 4:00 बजे से



27 अक्टूबर 2023 | सायं 4:00 बजे से

स्टेडियम में
प्रवेश
(दर्शकों के लिए)
अपराह्न 2:00 बजे से

समय: सायं 6:15 बजे से



समय: सायं 8:30 बजे से



स्थान: मरड गोमके जयपाल सिंह मुण्डा
एस्ट्रोटर्फ हॉकी स्टेडियम, रांची



WATCH LIVE ON



Title Sponsor

Host Partner

AHF Partners:

Official Partner

Official Suppliers



सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, झारखण्ड सरकार

PRNO 309929 (IPRD) 23-24

शौक और मौत

ज्ञा रखेंड के देवघर जिले में एक कार के पुल से गिर जाने के कारण एक ही परिवार के पांच सदस्यों की मौत हो गई। दुर्घटना उस बात हुई जब वाहन पुल से सिक्किया बैराज में गिर गया। कार देवघर के साठर स्थित आसनसोल संकुल गांव से गिरीही जा रही थी। पुलिस ने कहा, हादसा तब हुआ जब परिवार का एक सदस्य, जो पेशे से इंजीनियर था, वाहन चलाते समय सेल्फी लेने लगा और वाहन पर से नियंत्रण खो दिया। जब लोगों के शौक उनके जीवन को खोरा में डाल रहा है और कई दर्दनाक हास्यरोग लगातार घट रहे हैं ऐसे में यह घटना उन लोगों के लिये सिख है जो मोबाइल से सेल्फी लेने के क्रम में सुकृता की चिंता नहीं करते हैं। देश में हालत इतनी खराक हो गयी है कि हर दिन कम से कम दस व्यक्ति की जान मोबाइल से सेल्फी लेने, गाड़ी चलाते समय मोबाइल पर बात करने, सड़क पर चलाते हुए और सड़क पर बात करने से बाहर रहते रहने से हो रही है। यही नहीं तेज वाहनों पर स्टैटर करते हुए गिर बनाने, किसी भी गिर या नदी सहित रेलगाड़ियों के गेट से लटककर बिड़ियों बनाने की आदत लगातार खतरनाक होती जा रही है। मोबाइल का लगातार प्रयोग और इसके व्हाट्सअप, फेसबुक सहित विभिन्न सोशल मीडिया माध्यमों पर जिस प्रकार की स्थितियां बन रही हैं वह मौत का कारण बन रही है। कई ऐसे जॉब्स हैं जिनके कारण दर्जनों मौत की घटना भी सामान्य तौर पर वाहन चलाने हैं। विगत दिनों एक रेल दुर्घटना का मोबाइल पर बातचीन ही बनी। देश का कानून भी इसे गैर कानूनी मानता है लेकिन शौक लगातार भौत का कारण बन रही है।

कृषि उत्पाद के मूल्य

दे श में ऐसे बक्त में जब पांच राज्यों में चुनाव सिर पर हैं और

आम चुनाव भी दूर नहीं हैं, सरकारें और राजनीतिक दल लक्षित समूहों को लाभ पहुंचाने का श्रेय ले रहे हैं। प्रधानमंत्री की अधिकारता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडली लापता ने विपणन वर्ष 2024-25 में छह राजी फसलों के लिये एप्रेसी वृद्धि का फैसला लिया है। राजनीतिक व धार्मिक त्योहारों की ब्यावर में केंद्र सरकार ने घोषणा की है कि गेहूं समेत छह राजी की फसलों के लिये न्यूनतम समर्थन मूल्य यानी एमएसपी में दो से लेकर छह राजी की फसलों की वृद्धि की जाएगी। कहा जा रहा है कि केंद्र में राजग सरकार बनने के बाद एमएसपी में वह सबसे बड़ी वृद्धि है। सरकार का कानून है कि इस कास्त में फसलों के विविधकरण को बढ़ावा दियेगा। यह भी कि कृषि लगात एवं मूल्य आयोग की सिफारिश पर मसूर की दाल के समर्थन मूल्य में सबसे ज्यादा वृद्धि की गई है। इसके बाद गाँव व सररों के लिये दो सौ रुपये प्रति विकंटल की वृद्धि की गई है। साथ ही जै जै चर्चे की एमएसपी में भी वृद्धि हुई है। लेकिन अहम सवाल यह है कि क्या लगात से दोगुनी मूल्य की जो बात की जा रही थी उस दिशा में कोई काम हुआ है। साथ ही बाजार मूल्य पर जो फसल विद्युतकर गैंग सरकार द्वारा खरीदे जाते हैं उस गणित को सही समझें। वैसे केंद्र सरकार देश के उत्पादन का 14 प्रतिशत से अधिक नहीं खरीदती है। किसान के उत्पादों के मूल्य राजनीति के बैंट चढ़ जाते हैं। यह अलग बात है कि विगत दिशा में किसान एक बड़ा घोटाला बनाया जा रहा है। जबकि, कौरोंकों की सेना के महारथी अपने व्यक्तिगत संकल्पों, प्रतिज्ञा एवं प्रतिशोधों के लिए लड़े और युद्ध हो रहे थे।

इसी प्रकार कलयुग में कालांतर में जब छोटे छोटे गज्ज खासियत होने लगे तब इन गज्जों के बीच आपस में संगठन का संहार किया गया। आपस ने अपने उत्पादों की वृद्धि को होने लगा और वे अपने दोस्तों की लड़ाने लगे थे। संगठन भाव के कारण एक उद्देश्य को सम्पन्न रखकर जीता था। जबकि, कौरोंकों की सेना के महारथी अपने व्यक्तिगत संकल्पों, प्रतिज्ञा एवं प्रतिशोधों के लिए लड़े और युद्ध हो रहे थे।

इसी प्रकार कलयुग में कालांतर में जब छोटे छोटे गज्ज खासियत होने लगे तब इन गज्जों के बीच आपस में संगठन का संहार किया गया। आपस ने अपने उत्पादों की वृद्धि को होने लगा और वे अपने दोस्तों की लड़ाने लगे थे। संगठन भाव के कारण एक उद्देश्य को सम्पन्न रखकर जीता था। जबकि, कौरोंकों की सेना के महारथी अपने व्यक्तिगत संकल्पों, प्रतिज्ञा एवं प्रतिशोधों के लिए लड़े और युद्ध हो रहे थे।

इसी प्रकार कलयुग में कालांतर में जब छोटे छोटे गज्ज खासियत होने लगे तब इन गज्जों के बीच आपस में संगठन का संहार किया गया। आपस ने अपने उत्पादों की वृद्धि को होने लगा और वे अपने दोस्तों की लड़ाने लगे थे। संगठन भाव के कारण एक उद्देश्य को सम्पन्न रखकर जीता था। जबकि, कौरोंकों की सेना के महारथी अपने व्यक्तिगत संकल्पों, प्रतिज्ञा एवं प्रतिशोधों के लिए लड़े और युद्ध हो रहे थे।

इसी प्रकार कलयुग में कालांतर में जब छोटे छोटे गज्ज खासियत होने लगे तब इन गज्जों के बीच आपस में संगठन का संहार किया गया। आपस ने अपने उत्पादों की वृद्धि को होने लगा और वे अपने दोस्तों की लड़ाने लगे थे। संगठन भाव के कारण एक उद्देश्य को सम्पन्न रखकर जीता था। जबकि, कौरोंकों की सेना के महारथी अपने व्यक्तिगत संकल्पों, प्रतिज्ञा एवं प्रतिशोधों के लिए लड़े और युद्ध हो रहे थे।

इसी प्रकार कलयुग में कालांतर में जब छोटे छोटे गज्ज खासियत होने लगे तब इन गज्जों के बीच आपस में संगठन का संहार किया गया। आपस ने अपने उत्पादों की वृद्धि को होने लगा और वे अपने दोस्तों की लड़ाने लगे थे। संगठन भाव के कारण एक उद्देश्य को सम्पन्न रखकर जीता था। जबकि, कौरोंकों की सेना के महारथी अपने व्यक्तिगत संकल्पों, प्रतिज्ञा एवं प्रतिशोधों के लिए लड़े और युद्ध हो रहे थे।

इसी प्रकार कलयुग में कालांतर में जब छोटे छोटे गज्ज खासियत होने लगे तब इन गज्जों के बीच आपस में संगठन का संहार किया गया। आपस ने अपने उत्पादों की वृद्धि को होने लगा और वे अपने दोस्तों की लड़ाने लगे थे। संगठन भाव के कारण एक उद्देश्य को सम्पन्न रखकर जीता था। जबकि, कौरोंकों की सेना के महारथी अपने व्यक्तिगत संकल्पों, प्रतिज्ञा एवं प्रतिशोधों के लिए लड़े और युद्ध हो रहे थे।

इसी प्रकार कलयुग में कालांतर में जब छोटे छोटे गज्ज खासियत होने लगे तब इन गज्जों के बीच आपस में संगठन का संहार किया गया। आपस ने अपने उत्पादों की वृद्धि को होने लगा और वे अपने दोस्तों की लड़ाने लगे थे। संगठन भाव के कारण एक उद्देश्य को सम्पन्न रखकर जीता था। जबकि, कौरोंकों की सेना के महारथी अपने व्यक्तिगत संकल्पों, प्रतिज्ञा एवं प्रतिशोधों के लिए लड़े और युद्ध हो रहे थे।

इसी प्रकार कलयुग में कालांतर में जब छोटे छोटे गज्ज खासियत होने लगे तब इन गज्जों के बीच आपस में संगठन का संहार किया गया। आपस ने अपने उत्पादों की वृद्धि को होने लगा और वे अपने दोस्तों की लड़ाने लगे थे। संगठन भाव के कारण एक उद्देश्य को सम्पन्न रखकर जीता था। जबकि, कौरोंकों की सेना के महारथी अपने व्यक्तिगत संकल्पों, प्रतिज्ञा एवं प्रतिशोधों के लिए लड़े और युद्ध हो रहे थे।

इसी प्रकार कलयुग में कालांतर में जब छोटे छोटे गज्ज खासियत होने लगे तब इन गज्जों के बीच आपस में संगठन का संहार किया गया। आपस ने अपने उत्पादों की वृद्धि को होने लगा और वे अपने दोस्तों की लड़ाने लगे थे। संगठन भाव के कारण एक उद्देश्य को सम्पन्न रखकर जीता था। जबकि, कौरोंकों की सेना के महारथी अपने व्यक्तिगत संकल्पों, प्रतिज्ञा एवं प्रतिशोधों के लिए लड़े और युद्ध हो रहे थे।

इसी प्रकार कलयुग में कालांतर में जब छोटे छोटे गज्ज खासियत होने लगे तब इन गज्जों के बीच आपस में संगठन का संहार किया गया। आपस ने अपने उत्पादों की वृद्धि को होने लगा और वे अपने दोस्तों की लड़ाने लगे थे। संगठन भाव के कारण एक उद्देश्य को सम्पन्न रखकर जीता था। जबकि, कौरोंकों की सेना के महारथी अपने व्यक्तिगत संकल्पों, प्रतिज्ञा एवं प्रतिशोधों के लिए लड़े और युद्ध हो रहे थे।

इसी प्रकार कलयुग में कालांतर में जब छोटे छोटे गज्ज खासियत होने लगे तब इन गज्जों के बीच आपस में संगठन का संहार किया गया। आपस ने अपने उत्पादों की वृद्धि को होने लगा और वे अपने दोस्तों की लड़ाने लगे थे। संगठन भाव के कारण एक उद्देश्य को सम्पन्न रखकर जीता था। जबकि, कौरोंकों की सेना के महारथी अपने व्यक्तिगत संकल्पों, प्रतिज्ञा एवं प्रतिशोधों के लिए लड़े और युद्ध हो रहे थे।

इसी प्रकार कलयुग में कालांतर में जब छोटे छोटे गज्ज खासियत होने लगे तब इन गज्जों के बीच आपस में संगठन का संहार किया गया। आपस ने अपने उत्पादों की वृद्धि को होने लगा और वे अपने दोस्तों की लड़ाने लगे थे। संगठन भाव के कारण एक उद्देश्य को सम्पन्न रखकर जीता था। जबकि, कौरोंकों की सेना के महारथी अपने व्यक्तिगत संकल्पों, प्रतिज्ञा एवं प्रतिशोधों के लिए लड़े और युद्ध हो रहे थे।

इसी प्रकार कलयुग में कालांतर में जब छोटे छोटे गज्ज खासियत होने लगे तब इन गज्जों के बीच आपस में संगठन का संहार किया गया। आपस ने अपने उत्पादों की वृद्धि को होने लगा और वे अपने दोस्तों की लड़ाने लगे थे। संगठन भाव के कारण एक उद्देश्य को सम्पन्न रखकर जीता था। जबकि, कौरोंकों की सेना के महारथी अपने व्यक्तिगत संकल्पों, प्रतिज्ञा एवं प्रतिशोधों के लिए लड़े और युद्ध हो रहे थे।

इसी प्रकार कलयुग में कालांतर में जब छोटे छोटे गज्ज खासियत होने लगे तब

बहुत खतरनाक है सिस्ट की बीमारी

ऐसे पहुंचती है शरीर में सिस्ट

Hमरे देश में गंदगी, बीचड़ व नाले की भरमार है। मलमूत्र व कचरा जमीन पर खुले आम पड़ा होता है। कुते जहां-तहां मलमूत्र त्याग कर देते हैं, जिससे जमीन और वातावरण दूषित होता है। कहने का मतलब यह है कि मिट्टी, पानी व हवा में इस कीड़े (डिक्कानोकोक्स) के अंडों की भरमार है और ऐसी गंदी जगहों पर खांखेवाले, चाट वाले, फलों का रस निकलने वाले, भेलपुरी बेचने वाले लाइन लगा कर खड़े होते हैं। जाहिर है कि खुले वातावरण में विकने वाले खांखा पदार्थों का इन कोडों के अंडों से प्रतिक्रिया होती है। इसमें कोई शक्ति नहीं कि जब आप खांखा या मित्रों के सामान फरफरी के लिए निकलेंगे तो भला इन खुले आसामान में सड़कों के किनारे हवा के झोड़ों से टकराते लुधावने भारतीय फूड का आनंद उठाने से पीछे नहीं हटेंगे। जब गरमाराम मसालेदार खाना आप के पेट में पहुंचेगा तो वह अकेला नहीं होगा बल्कि अपने साथ सिस्ट बनाने वाले अंडे भी समेटे होंगा। आप को पता ही नहीं चलगा क्योंकि ये कोड़े के अंडे इतने बारीक होते हैं कि आंख से दिखते ही नहीं।

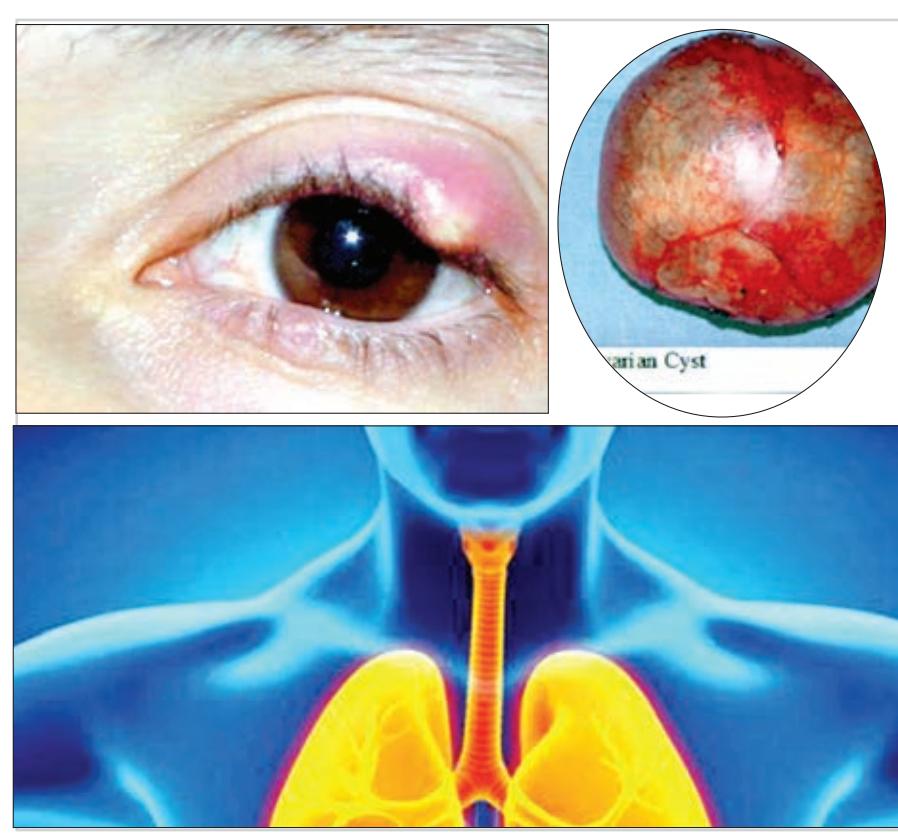
फेफड़े में सिस्ट

पेट में अंडे पहुंचने के बाद उपर्युक्त अंदर का कोड़ा बाहर निकल आता है और अंत की दीवार को छेद कर आंतों में सिस्ट खून की नलियों के जरिए जिगर में पहुंच जाता है और वहां से फिर शरीर के अन्य अंगों को प्रस्थान कर जाता है। शरीर में प्रमुख रूप से यह जिगर यानी लिवर और फेफड़े में अपना स्थायी पड़ाव डाल लेता है। अपने पड़ाव पर पहुंच कर वह बढ़ाना शुरू कर देता है और यह धीरे धीरे आकार में बढ़ाना शुरू कर देती है। सिस्ट बन जाने पर कवच के अंदर सुरक्षित कीड़ा अपने बच्चों को जन्म देने लगता है और कुछ समय के बाद इन की संख्या काफी मात्रा में हो जाती है जिन्हें मेंटिकल भाषा में 'डॉटर सिस्ट' कहते हैं।

ऐसे हो सकती है सिस्ट

अगर आप ऐसे इलाके में निवास करते हैं जहां भेड़ों व बकरियों को पालने व बेचने का धंधा होता है या फिर आप या आपके बच्चे गली-नुक़द में पाए जाने वाले आवारा कुतों के साथ खेलते हैं तो उन को स्पृष्ट

करते हैं। या फिर आप ने जो घर पर कुत्ता पाल रखा है उस को न तो नियमित इंजेक्शन लगाते हों और न ही उसकी समुचित सफाई का ध्यान रखे हों और वह पालतू कुत्ता घर के अंदर ज्यादा समय बिताने के बजाय बाहर की गंदी नलियों में मुँह मारता धूमता हो, तो सिस्ट रोग होता है। अगर पेट के द्वारा हिस्से में दर्द होता है और उसी हिस्से में गांठ भी मालूम पड़ती है तो हो सकता है कि जिगर यानी लिवर में सिस्ट विराजमान होता है।



सरती व सरल है सिस्ट की जांच

फेफड़े के सिस्ट रोग से पीड़ित मरीज को चाहिए कि वह किसी अनुभवी थेरेपिस्क जिगर ने से परामर्श करे और उनकी निवारनी में जल्द से जल्द इलाज शुरू कर दे वरने के फेफड़े के जिगर के सिस्ट रोग जाने पर पीड़ित मरीज को गंभीर परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। जाती का एक्सरेस सिस्ट की उपस्थिति को प्रमाणित करने

के अंडों से भरारू पीट है।

कभी-कभी ऑपरेशन के बजाय सूर्य डाल कर फेफड़े की सिस्ट का पानी निकाल कर उसमें दवा भरनी पड़ती है। पर वह स्थायी इलाज नहीं है और दूसरे, सूर्य से निकालते समय सिस्ट के अंदर का पानी छाती के अंदर फेफड़े का डर रहता है जिससे जाती व दूसरे अंगों में और नई-नई अनगिनत सिस्ट के बनने का खतरा पैदा हो जाता है। इसलिए सूर्य द्वारा इलाज कुछ विशेष परिस्थितियों में ही मजबूरन करना पड़ता है, जहां मरीज की अवस्था ठीक न हो।

एक विशेष दवा अल्बेंडोजल ऑपरेशन के पहले व बाद में दी जाती है। इसलिए ऐसे मरीजों को चाहिए कि किसी बड़े अस्पताल में, जहां अत्याधुनिक ऑपरेशन शिप्रट व आईसीयू की सुविधा हो और जहां फेफड़े के ऑपरेशन नियमित रूप से होते हों, अपना इलाज कारबाही। इस तरह के ऑपरेशन के लिए एक अनुभवी थेरेपिस्क सर्जन का होना बहुत जरूरी है।

एक विशेष दवा अल्बेंडोजल ऑपरेशन के पहले व बाद में दी जाती है। इसलिए ऐसे मरीजों को चाहिए कि किसी बड़े अस्पताल में, जहां अत्याधुनिक ऑपरेशन शिप्रट व आईसीयू की सुविधा हो और जहां फेफड़े के ऑपरेशन नियमित रूप से होते हों, अपना इलाज कारबाही। इस तरह के ऑपरेशन के लिए एक अनुभवी थेरेपिस्क सर्जन का होना बहुत जरूरी है।

एक विशेष दवा अल्बेंडोजल ऑपरेशन के पहले व बाद में दी जाती है। इसलिए ऐसे मरीजों को चाहिए कि किसी बड़े अस्पताल में, जहां अत्याधुनिक ऑपरेशन शिप्रट व आईसीयू की सुविधा हो और जहां फेफड़े के ऑपरेशन नियमित रूप से होते हों, अपना इलाज कारबाही। इस तरह के ऑपरेशन के लिए एक अनुभवी थेरेपिस्क सर्जन का होना बहुत जरूरी है।

एक विशेष दवा अल्बेंडोजल ऑपरेशन के पहले व बाद में दी जाती है। इसलिए ऐसे मरीजों को चाहिए कि किसी बड़े अस्पताल में, जहां अत्याधुनिक ऑपरेशन शिप्रट व आईसीयू की सुविधा हो और जहां फेफड़े के ऑपरेशन नियमित रूप से होते हों, अपना इलाज कारबाही। इस तरह के ऑपरेशन के लिए एक अनुभवी थेरेपिस्क सर्जन का होना बहुत जरूरी है।

एक विशेष दवा अल्बेंडोजल ऑपरेशन के पहले व बाद में दी जाती है। इसलिए ऐसे मरीजों को चाहिए कि किसी बड़े अस्पताल में, जहां अत्याधुनिक ऑपरेशन शिप्रट व आईसीयू की सुविधा हो और जहां फेफड़े के ऑपरेशन नियमित रूप से होते हों, अपना इलाज कारबाही। इस तरह के ऑपरेशन के लिए एक अनुभवी थेरेपिस्क सर्जन का होना बहुत जरूरी है।

एक विशेष दवा अल्बेंडोजल ऑपरेशन के पहले व बाद में दी जाती है। इसलिए ऐसे मरीजों को चाहिए कि किसी बड़े अस्पताल में, जहां अत्याधुनिक ऑपरेशन शिप्रट व आईसीयू की सुविधा हो और जहां फेफड़े के ऑपरेशन नियमित रूप से होते हों, अपना इलाज कारबाही। इस तरह के ऑपरेशन के लिए एक अनुभवी थेरेपिस्क सर्जन का होना बहुत जरूरी है।

एक विशेष दवा अल्बेंडोजल ऑपरेशन के पहले व बाद में दी जाती है। इसलिए ऐसे मरीजों को चाहिए कि किसी बड़े अस्पताल में, जहां अत्याधुनिक ऑपरेशन शिप्रट व आईसीयू की सुविधा हो और जहां फेफड़े के ऑपरेशन नियमित रूप से होते हों, अपना इलाज कारबाही। इस तरह के ऑपरेशन के लिए एक अनुभवी थेरेपिस्क सर्जन का होना बहुत जरूरी है।

एक विशेष दवा अल्बेंडोजल ऑपरेशन के पहले व बाद में दी जाती है। इसलिए ऐसे मरीजों को चाहिए कि किसी बड़े अस्पताल में, जहां अत्याधुनिक ऑपरेशन शिप्रट व आईसीयू की सुविधा हो और जहां फेफड़े के ऑपरेशन नियमित रूप से होते हों, अपना इलाज कारबाही। इस तरह के ऑपरेशन के लिए एक अनुभवी थेरेपिस्क सर्जन का होना बहुत जरूरी है।

एक विशेष दवा अल्बेंडोजल ऑपरेशन के पहले व बाद में दी जाती है। इसलिए ऐसे मरीजों को चाहिए कि किसी बड़े अस्पताल में, जहां अत्याधुनिक ऑपरेशन शिप्रट व आईसीयू की सुविधा हो और जहां फेफड़े के ऑपरेशन नियमित रूप से होते हों, अपना इलाज कारबाही। इस तरह के ऑपरेशन के लिए एक अनुभवी थेरेपिस्क सर्जन का होना बहुत जरूरी है।

एक विशेष दवा अल्बेंडोजल ऑपरेशन के पहले व बाद में दी जाती है। इसलिए ऐसे मरीजों को चाहिए कि किसी बड़े अस्पताल में, जहां अत्याधुनिक ऑपरेशन शिप्रट व आईसीयू की सुविधा हो और जहां फेफड़े के ऑपरेशन नियमित रूप से होते हों, अपना इलाज कारबाही। इस तरह के ऑपरेशन के लिए एक अनुभवी थेरेपिस्क सर्जन का होना बहुत जरूरी है।

एक विशेष दवा अल्बेंडोजल ऑपरेशन के पहले व बाद में दी जाती है। इसलिए ऐसे मरीजों को चाहिए कि किसी बड़े अस्पताल में, जहां अत्याधुनिक ऑपरेशन शिप्रट व आईसीयू की सुविधा हो और जहां फेफड़े के ऑपरेशन नियमित रूप से होते हों, अपना इलाज कारबाही। इस तरह के ऑपरेशन के लिए एक अनुभवी थेरेपिस्क सर्जन का होना बहुत जरूरी है।

एक विशेष दवा अल्बेंडोजल ऑपरेशन के पहले व बाद में दी जाती है। इसलिए ऐसे मरीजों को चाहिए कि किसी बड़े अस्पताल में, जहां अत्याधुनिक ऑपरेशन शिप्रट व आईसीयू की सुविधा हो और जहां फेफड़े के ऑपरेशन नियमित रूप से होते हों, अपना इलाज कारबाही। इस तरह के ऑपरेशन के लिए एक अनुभवी थेरेपिस्क सर्जन का होना बहुत जरूरी है।

एक विशेष दवा अल्बेंडोजल ऑपरेशन के पहले व बाद में दी जाती है। इसलिए ऐसे मरीजों को चाहिए कि किसी बड़े अस्पताल में, जहां अत्याधुनिक ऑपरेशन शिप्रट व आईसीयू की सुविधा हो और जहां फेफड़े के ऑपरेशन नियमित रूप से होते हों, अपना इलाज कारबाही। इस तरह के ऑपरेशन के लिए एक अनुभवी थेरेपिस्क सर्जन का होना बहुत जरूरी है।

एक विशेष दवा अल्बेंडोजल ऑपरेशन के पहले व बाद में दी जाती है। इसलिए ऐसे मरीजों को चाहिए कि किसी बड़े अस्पताल में, जहां अत्याधुनिक ऑपरेशन शिप्रट व आईसीयू की सुविधा हो और जहां फेफड़े के ऑपरेशन नियमित रूप से होते हों, अपना इलाज कारबाही। इस तरह के ऑपरेशन के लिए एक अनुभवी थेरेपिस्क स

